ISSN 0974-0053
Vol-23-Issue-06
June-2020

समसामयिक वैश्विक मुद्दें "पर्यावरण संरक्षण"

Current Global Issues "Environmental Protection"

डॉ॰ विष्णु कुमार[1], डॉ॰ जय प्रकाश सिंह[2]

[1]सहायक आचार्य, शिक्षा विभाग, दूरस्थ शिक्षा विभाग, जैन विश्वभारती संस्थान, लाडनूं (राजस्थान)

[2]सहायक आचार्य, दूरस्थ शिक्षा विभाग, जैन विश्वभारती संस्थान, लाडनूं (राजस्थान)

सारांश

विकास एक सतत प्रक्रिया है। इक्कीसवीं सदी में विकास के तरफ मानव के बढ़ते कदम को जीवन दायिनी प्रकृति ने सदैव सहयोग दिया है। एक ओर जनसंख्या वृद्धि और तीव्र औद्योगिक-विकास के कारण समग्र पर्यावरण क्षय की चपेट में आ गया है, दूसरी ओर बढ़ते विभिन्न प्रकार के प्रदूषणों ने न सिर्फ गुणवत्ता को प्रभावित किया बल्कि पर्यावरण के लिए संकट की ओर दस्तक दी है। जाने-अनजाने में अपने जीवन स्तर को ऊपर उठाने के नाम पर मानव ने प्रकृति का अत्यधिक दोहन करता जा रहा है। जैसे- वनों की कटाई, अत्यधिक ऊपज के लिए रासायनिक खाद का उपयोग, औद्योगिक कचड़े का सीधे जल में प्रवाहित किया जाना आदि। संतुलित विकास एवं शाश्वत विकास की प्रक्रिया के नहीं अपनाये जाने के कारण आज पर्यावरणीय समस्या वर्तमान समय में राज्य या प्रदेश तक ही सीमित न होकर पूरे विश्व की गंभीर एवं ज्वलन्त समस्या बन गई है।

शब्दार्थ: पर्यावरण, जल प्रदूषण, वायु प्रदूषण, ध्वनि प्रदूषण, भूमि प्रदूषण।

प्रस्तावना (Preface)

प्राकृतिक चीजों से मानव का खिलवाड़ लम्बे समय से चला आ रहा है। एक समय था जब प्राकृतिक संसाधन की बहुलता थी। यह माना जाता था कि हम प्राकृतिक संसाधन का चाहे जितना उपयोग करें, कोई सीमा नहीं है। पर मानव अपने आर्थिक उद्देश्य और जीवन में विलासिता के लक्ष्यों की प्राप्ति हेतु प्रकृति के साथ व्यापक छेडछाड़ के क्रियाकलापों ने प्रकृति पर्यावरण का संतुलन नष्ट किया है, जिसमें प्राकृतिक व्यवस्था या प्रणाली के अस्तित्व पर ही संकट उत्पन्न हो गया है। पर्यावरण का क्षय या ह्रास करने में जनसंख्या वृद्धि,

Copyright©authors

ISSN 0974-0053
Vol-23-Issue-06
June-2020

नगरीकरण, जल प्रदूषण, वायु प्रदूषण, ध्वनि प्रदूषण, प्रकाश प्रदूषण, भूमि प्रदूषण, रेडियोधर्मी प्रदूषण से पर्यावरण का ह्रास हो रहा है। औद्योगिक क्रांति के बाद से आबादी में वृद्धि एवं उसकी आवश्यकताओं को पूरा करने के लिए आर्थिक विकास के परिणामस्वरूप सदियों से चला आ रहा पर्यावरणीय संतुलन इस कदर बिगड़ गया है कि एक ओर तो मौसम के मिजाज में कहीं अधिक गर्मी देखने में आ रही हैं, जहां अक्सर जंगलों में अपने आप आग लग जाने की घटना देखने को मिलती है। तो वहीं दूसरी ओर हिम युग के आने की संभावना व्यक्त की जा रही है। अर्थात्, जहां बर्फ पडती है, वहां इतनी अधिक बर्फ आ जाती है कि मानों जिंदगी ही थम गई हो, जिससे प्रलय की स्थिति उत्पन्न हो जाती है। किसी भी देश में जो भी विकास की कार्ययोजना बनती हो, वह प्रत्यक्ष एवं अप्रत्यक्ष रूप से पर्यावरण को प्रदूषित करती है। एक पक्ष विकास का है तो दूसरा पर्यावरण की रक्षा का। आज विकास की योजनाओं में एकमात्र ''अर्थ की महत्ता'' है। मानव के सुखी एवं भौतिक जीवन की कामना ही पर्यावरण के लिए समस्या बन गई है। इस तरह मानव विकास की नैतिक मूल्यों को छोड़ता रहा तो मानव का भौतिक अस्तित्व भी खतरे में पड़ जाएगा।

वर्तमान समय में पर्यावरणीय प्रदूषण करने वाले कारक (Factors of Environmental Pollution at the Present time)

औद्योगिकीकरण गतिविधि (Industrialization Activity): उद्योगों को स्थापित करते समय प्रकृति को काफी नुकसान करके हम अपने विकास की सीढ़ियों को तय कर रहे हैं। औद्योगिकीकरण के परिणामस्वरूप वर्तमान समय में कारखानों की जैसे बाढ़ हो गई है, लेकिन इन उद्योग धन्धों से निकलने वाला अवशिष्ट पदार्थ सीधे अन्य स्रोतों में प्रभावित कर दिया जाता रहा है जिससे वे सभी स्रोत भी दूषित होते जा रहे हैं- जल, हवा, मिट्टी आदि।

शहरीकरण (Urbanization): जहां उद्योग धन्धे एवं कारखाने खुले वहां पर काम करने वाले लोग बसते गए। धीरे-धीरे स्लम बस्तियों से विकसित होते हुए शहर का निर्माण हुआ। जहां हर प्रकार की सुख-सुविधाएं, आराम-पसंद वस्तुओं की उपयोगिता बढ़ती गई, जिससे प्राकृतिक स्रोत का अत्यधिक उपभोग की प्रवृत्ति बढ़ी। जैसे- पानी का अत्यधिक उपभोग, बिजली का सामान, वाहन आदि।

जल प्रदूषण (Water Pollution): पृथ्वी पर लगभग 97% जल खारा है, 2% जल वर्षा के रूप में मौजूद है जबकि 1% जल नदियों एवं कुओं आदि में है। जिसमें सतही जल 0.6% है जो मानव उपयोगी है। इसे भी मानव स्वार्थपूर्ण लाभ एवं विकास कार्य के नाम पर प्रदूषित

Copyright©authors

ISSN 0974-0053
Vol-23-Issue-06
June-2020

किये जा रहा है। दूसरी तरफ समुद्र जल में आए दिन परमाणु परीक्षणों से जल नाभिकीय कणों से समुद्री जीव एवं वनस्पति नष्ट हो रही है। जल प्रदूषण होने में मानव की गतिविधि का प्रमुख हाथ है। इसका प्रमुख कारण निरन्तर बढ़ती आबादी, जल स्रोतों के दुरूपयोग, वर्षा के पानी में कमी एवं उसका सुव्यवस्थित उपयोग न होना है। साथ ही कारखानों एवं नगर के गंदे पानी सीधे नदी या अन्य जल स्रोतों में प्रभावित किया जाना है जिससे जल जहरीली एवं अनेक बीमारियां फैलाता है। जैसे- पेचिश, खुजली, हैजा आदि। साथ ही साथ शुद्ध जल का निरंतर अभाव बनता गया तो शीघ्र ही गंभीर समस्या उत्पन्न हो जाएगी।

वायु प्रदूषण (Air Pollution): 'वायु' पर्यावरण का प्रमुख तत्त्व है जिसके बिना जीवन की कल्पना नहीं की जा सकती। यूं कहें कि मानव इसके बगैर तो 5-6 मिनट से अधिक जिन्दा नहीं रह सकता है। धरातल से लगभग 10-30 मील की ऊंचाई पर ओजोन गैस की परत है जो कि धीरे-धीरे पतली होती जा रही है जिससे सूर्य की पराबैंगनी किरणों के पृथ्वी पर आने से स्वास्थ्य सम्बन्धी रोग, सिरदर्द, घूटन जैसे रोगों के फैलने का डर बना हुआ है। इतना ही नहीं धरातल पर मानव गतिविधियां विकास की अंधी दौड़ में शामिल हैं, जिससे शुद्ध वायु को कैसे बचाया जाए। यह महत्त्वपूर्ण प्रश्न बन चुका है। इसका प्रमुख कारण वाहनों एवं कारखानों की चिमनियों से निकलने वाले धुएं एवं घरेलू ईंधन जिम्मेदार है। वायु प्रदूषण के कारण फेफड़ों तथा त्वचा, कैंसर जैसी बीमारियां बढ़ रही हैं। बैंगलूरू तो जैसे अस्थमा की राजधानी बनती जा रही है। दिल्ली शहर में फैली विषैली हवा से बड़े एवं बच्चे भी रोगग्रस्त की ओर अग्रसर हो रहे हैं।

ध्वनि प्रदूषण (Sound Pollution): ध्वनि प्रदूषण के लिए प्रमुख कारण आये दिन तेज लाऊड स्पीकर, अनियंत्रित यातायात के साधनों से निकलने वाली आवाज तथा कल-कारखानों से होने वाले शोरगुल जिम्मेदार हैं। जैसे- मस्जिद पर लगे लाऊड स्पीकर से सुबह-शाम को लगने वाली अजान, ट्रेक्टर, हवाई जहाज की आवाज, मेले में लगे लाऊड स्पीकर से किए जाने वाले प्रचार आदि। ऐसा नहीं है कि ध्वनि प्रदूषण के लिए कानून नहीं है किन्तु उनका पालन नहीं किया जाता है।

भूमि प्रदूषण (Land Pollution): भूमि 'पृथ्वी' का वह भाग है जिस पर सभी जीव-जन्तु, पेड़-पौधे एवं अनेक प्राकृतिक संसाधन होते हैं। वैसे तो भूमि प्रदूषण प्राकृतिक रूप से भी होते हैं। जैसे- ज्वालामुखी, भूकंप, बाढ़ आदि। परन्तु मानव द्वारा धरती को परस्पर प्रदूषित किया जाना प्रमुख कारण है। मानव द्वारा वनों का विनाश (Destruction of forests), खदानों (Mines), भूक्षरण, रासायनिक खाद एवं कीटनाशक दवाओं का उपयोग किया जाता है जिससे

Copyright©authors

ISSN 0974-0053
Vol-23-Issue-06
June-2020

भूमि प्रदूषित हो जाती है। साथ ही विकास के नाम पर हजारों हेक्टेयर जमीन और जंगल खनन, बड़े बांधों, लम्बी सड़कों आदि की भेंट चढ़ जाते हैं। जिससे वनों की कटाई से वन का विनाश हो जाता है। बाद में उद्योगों से निकलने वाला अवशिष्ट पदार्थ सीधे भूमि पर छोड़ देते हैं, जिससे प्रदूषण बढ़ता जा रहा है।

प्लास्टिक से प्रदूषण (Pollution from Plastics): वर्तमान समय में मानव हर छोटी से छोटी चीजों में प्लास्टिक का उपयोग बहुतायत रूप से देखने को मिलता है। चाहे वो पीने के पानी की बोतल हो, थैली अन्य खाद्य पदार्थ या अन्य कोई वस्तु हो। प्रत्येक चीज की पैकिंग में इसका अत्यधिक उपयोग, कम लागत एवं उपभोगवादी संस्कृति के कारण हो रहा है। जहां एक बार उपयोग के बाद इसे फैंक दिया जाता है, जिससे धीरे-धीरे यह कचड़े के रूप में इकट्ठा हो जाता है। प्लास्टिक कचड़े से धीरे-धीरे उपजाऊ जमीन बंजर हो जाती है। साथ ही यदि यही स्थिति बनी रही तो समुद्र में 2050 ई. तक मछलियों से ज्यादा प्लास्टिक का कचरा देखने को मिलेगा।

मोबाइल टॉवर से प्रदूषण (Pollution from Mobile Towers): आधुनिक युग में हर एक से दो किलोमीटर पर मोबाइल के टावर देखने को मिलते हैं। इन टॉवरों से निकलने वाले रेडिएशन से छोटे पक्षियों एवं मानव को खतरा बढ़ते जा रहा है। छोटे पक्षी जैसे- गौरैया मानो लुप्त ही हो गये हैं। साथ ही मानव जाति के लिए कैंसर, हृदय रोग जैसी बीमारियों को न्यौता (Invitation) दे रहे हैं, एवं इन टॉवरों पर लगे हुए इलेक्ट्रानिक सामान खराब होने के बाद ई-कचरे का रूप ले लेता है।

ई-कचरा से प्रदूषण (Pollution from e-waste): आज भौतिक विकास के नित नई ऊंचाइयों की ओर ले जाने में इलेक्ट्रानिक और इलेक्ट्रिक का काफी हाथ रहा है, पर तकलीफ तब होती है जब उसके उपयोग के बाद इसका सही रूप से विघटन न किए जाने से है अर्थात् 'ई-कचरा' जब हम इलेक्ट्रिकल उपकरणों को लम्बे समय तक उपयोग करने के पश्चात् उसे बदलने/ खराब होने पर उसे फैंक कर दूसरा नया उपकरण हम प्रयोग में लेते हैं। जिससे अनावश्यक 'ई-कचरा' उत्पन्न होता है। 'ई-कचरा' हमारे पर्यावरण में दिखाई देने लगा है जैसे सोलर लाइट के पैनल, टी.वी. किट, मोबाईल किट, ऑडियो कीट आदि। इस किट में लगे हुए सामान के अंतर्गत खतरनाक रासायनिक पदार्थों का उपयोग होता है जो हानिकारक होता है।

ग्लोबल वार्मिंग से होने वाला प्रदूषण (Pollution from Global Warming): पृथ्वी के तापमान में वृद्धि के कारण मौसम में परिवर्तन हो रहा है। जहां पहले की तुलना में पृथ्वी अब दो गुनी से ज्यादा गर्म हो चुकी है। इससे बर्फ के ग्लेशियर पिघल रहे हैं। समुद्र के तट

Copyright©authors

ISSN 0974-0053
Vol-23-Issue-06
June-2020

के निचले क्षेत्र में बाढ़ आने एवं इन ग्लेशियर से निकलने वाले जीवनदायिनी नदियों के जल का स्रोत एक समय के बाद कम या बंद हो जाने से परिणाम घातक होगा। इसका प्रमुख कारण ग्रीन हाऊस गैस है। कार्बन डायऑक्साइड (CO_2) मेथेन (CH_4) नाइट्रस ऑक्साइड (N2O) ओजोन (O_3) हाइड्रोक्लोरोकार्बन (HFC_5) सल्फर हेक्साफ्लोराइट (SF_6) आदि। इसके अनेक कारण हैं जैसे- पावर स्टेशन से निकलने वाले उत्सर्जित गैस, इंडस्ट्री एवं वाहनों से निकलने वाले धुएं, कचरा जलाने से आदि।

ऊर्जा उत्पादन से प्रदूषण (Pollution from Energy Production): आज विकास के लिए ऊर्जा की काफी मांग है चाहे औद्योगिक क्षेत्र हो या गांव-शहर, सभी जगह ऊर्जा चाहिए। इसके विभिन्न स्रोत हैं जैसे- पनबिजली, सौर ऊर्जा, पवन ऊर्जा, कोयला ऊर्जा, पेट्रोलियम ऊर्जा, सी.एन.जी. गैस एवं परमाणु ऊर्जा आदि। इसको स्थापित करने एवं इससे उत्सर्जित पदार्थ के साथ-साथ इसके खराब होने के बाद इसमें लगे हुए सामान जो रासायनिक पदार्थों से बना होता है उसे इधर-उधर फैंकने से भी प्रदूषण फैलता है।

पर्यावरण संरक्षण के उपाय (Measures of Environmental Protection)

जब से मनुष्य के हाथों में ऊर्जा एवं मशीन की ताकत आ गई है, तब से वह प्रकृति के संसाधनों का न सिर्फ उपयोग बल्कि, बढ़ती आबादी और उसकी बढ़ती आवश्यकता, भूख के काराण उसका दोहन करने लगा है। हालांकि कुछ मजबूरियां भी है, किन्तु फिर भी आखिर कोई सीमा तो बांधनी ही होगी ताकि प्रकृति का स्वाभाविक विकास और पुनः अपनी क्षतिपूर्ति करते हुए सतत बने रह सके। मानव के विभिन्न क्रियाकलाप ही पर्यावरण में व्याप्त असंतुलन के जिम्मेदार हैं। इसे ही अपनी बुद्धि एवं विवेक के साथ विकास एवं प्रकृति संरक्षण के बीच उचित संतुलन साधने की बात करनी होगी। इस बात को भी समझना होगा कि ''सादा जीवन उच्च विचार'' (जीवन-मूल्य) को रखे ताकि, कम से कम संसाधनों का उपयोग हो। मानव का नेतिक दायित्व भी है कि, वे अपनी विकास परियोजनाओं को पर्यावरणीय परिप्रेक्ष्य में तय करें। साथ ही निरंतर हमें विज्ञान के बल पर विकल्पों को खोजना होगा और मानव में जागृति भी बढ़ानी होगी।

जल संरक्षण (Water Conservation): ''जल ही जीवन है'' की बातों को ध्यान में रखते हुए उसके सुव्यवस्थित उपयोग के साथ-साथ इसको प्रदूषण से भी बचाना होगा ताकि कल सुरक्षित हो सके। शहर या गांव से गंदा पानी हो या कारखाने से निकले हुए अवशिष्ट पदार्थ को सीधे नदी-नाले में प्रवाहित न होने देवे। उसे उचित वैज्ञानिक प्रणाली द्वारा निपटारा करें। साथ ही जल का समुचित उपयोग पर बल दें। जैसे- दाढ़ी एवं ब्रश करते समय नल खुला न

Copyright©authors

ISSN 0974-0053
Vol-23-Issue-06
June-2020

रखें, स्नान के लिए झरने (शॉवर) के स्थान पर बाल्टी एवं मग का प्रयोग करें। फर्श धोने के बजाय पोछा लगाए आदि।

वायु संरक्षण (Air Protection): कारखाने की चिमनियों को काफी ऊंचा रखें। साथ ही धूल एवं धुएं को नियंत्रित करने के लिए सुव्यवस्थित व्यवस्था करें। जितना हो अधिक से अधिक वृक्षारोपण करें, व्यक्तिगत वाहन की जगह सार्वजनिक वाहन का उपयोग करें, कूड़ा-करकट खुले में न फैंके और न उसे जलाए बल्कि उसका विघटन पर विचार करें।

भूमि संरक्षण (Land Conservation): फसलों के अत्यधिक उपज के लिए कीटाणुनाशक दवाओं एवं रासायनिक खाद के स्थान पर गोबर खाद का उपयोग किया जा सकता है। इससे उर्वरक क्षमता भी कम नहीं होती- खनिज पदार्थ, खनन का सुव्यवस्थित ढंग से स्थापित एवं संचालित हो। औद्योगिक कूड़ा-कचरे को सीधे भूमि पर न छोड़ें, इसका उचित विघटन की व्यवस्था किया जाना चाहिए।

प्लास्टिक का बहिष्कार (Plastic boycott): प्लास्टिक प्रदूषण से मुक्ति के लिए न केवल सख्त कानून बनाने का काम बल्कि इसके लिए समाज में जागरूकता लानी पड़ेगी। साथ ही दैनिक जीवन की आावश्यकताओं में प्लास्टिक की उपयोगिता को धीरे-धीरे कम कर वैकल्पिक साधनों का उपयोग करना होगा, ताकि इसके उत्पादन, विक्रय और उपभोग तीनों स्तर पर कमी आए। जहां तक संभव हो रिसाइकिलिंग की प्रक्रिया अपनाई जाए। अपने चारों ओर प्लास्टिक कचरा सर्वाधिक दिखता है। इसका कारण है सर्वाधिक उपयोग। इससे कम-से-कम उपयोग करने की आदत विकसित करनी होगी। एक बार उपयोग (वन टाइम यूज प्लास्टिक) का बहिष्कार करना होगा, साथ ही जिनका हम दोबारा इस्तेमाल कर सकते हैं उसका उपयोग अवश्य लें। जल्दी यूज एण्ड थ्रो न करें। इधर-उधर प्लास्टिक कचरा न फैंके, इसका सुव्यवस्थित ढंग से विघटन आवश्यक है।

मोबाइल टॉवर से दूरी (Distance from Mobile Tower): मोबाइल टॉवर की मशीन जिस जगह पर लगी होती है उस जगह से लगभग 500-1000 मीटर तक रेडिएशन फैलता है, जो मानव के लिए घातक बीमारियों को उत्पन्न करने में सहायक होती है। इसलिए इसका उपयोग लोगों से उचित दूरी पर व्यवस्थित करके किया जाना चाहिए।

ई-कचरा का उचित विघटन (Proper Dissalution of e-garbage): विभिन्न प्रकार के इलेक्ट्रॉनिक किट देखने को मिलती हैं। इन सर्किटों के निर्माण में खतरनाक रासायनिक पदार्थों का उपयोग होता है। जैसे- क्रोमियम, सिलिकॉन, सल्फर आदि। इसका सही रूप से

Copyright©authors

ISSN 0974-0053
Vol-23-Issue-06
June-2020

निराकरण जरूरी है। 2016 में ई-वेस्ट प्रबन्धन नियम लागू होने के बाद भी अभी तक नियंत्रण नहीं पाया जा सका है। इसे कड़ाई से लागू कराया जाना चाहिए।

स्वस्थ ऊर्जा (Healthy Energy): पवन एवं सौर ऊर्जा ये दो कभी खत्म न होने वाले स्रोत हैं। इस पर सुव्यवस्थित शोध, निर्माण एवं अत्यधिक उपभोग का प्रचार जरूरी है। विश्व में चीन, अमेरिका और रूस के बाद भारत का चैथा बड़ा ऊर्जा का उपभोक्ता है। स्वच्छ ईंधन के लिए 'ईथनोल' का विकल्प अच्छा है। इसके अनेक फायदे भी हैं- कम दाम, कृषि सेक्टर को बढावा, प्रदूषण पर नियंत्रण, ओजोन परत में होने वाली क्षति को कम करने में मदद करता है। पर्यावरण में क्षति पहुचाने वाली ग्रीन हाऊस गैस को उत्सर्जित करता है।

अन्य उपाय (Other Measures)

किसी भी प्रकार के कन्स्ट्रक्शन या विकास के लिए जितने भी पेड़ काटे जाएं उसके दो गुना पेड़ लगाएं एवं उसकी देखभाल भी हो।

- कार्यालय हो या घर का गमला में पौधे को जगह अवश्य दें।
- विशेष दिनों पर पर्यावरणीय विकास का कार्य अवश्य करें। जैसे- जन्मदिन, शादी की वर्षगांठ, किसी को सम्मानिक, स्नेह-मिलन आदि।
- कागज का कम उपयोग, साथ ही 'रि-साइकिलिंग' करके दोबारा उपयोग लेना, डिजिटल का उपयोग ज्यादा करना।
- "Use and Throw" एक बार इस्तेमाल कर फैंकने वाली वस्तुओं को कम उपयोग में लेवें। जैसे- टिशू पेपर की जगह छोटा तौलिया उपयोग में लेवें जिससे दोबारा सफाई कर उपयोग किया जा सके।
- कचरे का उचित निपटारा- कचरे को पहले अलग-अलग कर लेवें और उसके प्रकृति के अनुसार ही उसका निपटारा करें, ताकि पर्यावरण को कम नुकसान हो।
- जहां तक हो सके वृक्षारोपण कार्य फैलाएं।

''मानव प्रकृति'' पर अपनी विजय की महत्त्वाकांक्षा के कारण इसका अंधाधुंध दोहन कर रहा है। इंसानों का उपभोग और धरती से प्राप्त पदार्थों की बर्बादी साल दर साल बढ़ती जा रही है। पूरी धरती पर सम्पूर्ण मानवता द्वारा उपभोग की जाने वाली सामग्री की मात्रा दस हजार करोड़ टन सालाना के पार पहुंच गई है। प्रति व्यक्ति उपभोग का हिसाब लगाएं तो यह आंकड़ा तेरह टन है। धरती से जीवाश्म ईंधन, धातुओं, निर्माण सामग्री और पेड़ों के निरंतर दोहन के चलते जलवायु व वन्य जीव आपातकाल का सामना करना पड़ रहा है। रिपोर्ट के

Copyright©authors

ISSN 0974-0053
Vol-23-Issue-06
June-2020

अनुसार संसाधनों को असीमित मानने की मानसिकता हमें वैश्विक आपदा की ओर ले जा रही है। महात्मा गांधी का यह कथन आज भी प्रासंगिक है- ''पृथ्वी पर हम इंसान की जरूरतों को पूरा करने के लिए बहुत कुछ है लेकिन इंसान की लालच को पूरा करने के लिए नहीं'' पर्यावरण प्रदूषण इस समय विश्वव्यापी समस्या स्वार्थपूर्ण लाभ की प्रवृत्ति एवं उपभोगवादी संस्कृति के कारण है। इस तरह निरंतर बढ़ते प्रदूषण से हमारे जन-जीवन, स्वास्थ्य, मन-मस्तिष्क, मौसम और प्राकृतिक संसाधनों आदि सभी को बुरी तरह से प्रभावित कर रहा है। आज हमने लालच में अपनी धरती, वायु, वनस्पति, जीव-जन्तु एवं जल इत्यादि पूरे पर्यावरण को प्रदूषित किया है। अब हमें इस बात की आवश्यकता है कि सर्कुलर इकोनॉमी जिसमें उपभोग होने वाले पदार्थों की बर्बादी एवं ऊर्जा की लीकेज न्यूनतम होती है और पदार्थों की रिसाइकिलिंग होती है। साथ ही साथ हमारी प्राचीन संस्कृति के मूल में प्रकृति के प्रति जो आस्था भाव, जो मैत्रीभाव, जो प्रेम भाव था वह आज लुप्त अवस्था में है इसे जागृत करना पड़ेगा।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

1. गोयल, एम.के. (2015) ''पर्यावरण शिक्षा'', अग्रवाल पब्लिकेशन्स, आगरा-2.
2. गोस्वामी, के.डी. (2015) ''समाज एवं पर्यारण: चुनौतियां एवं समाधान'', रावत प्रकाशन, नई दिल्ली।
3. गुप्ता, चांदमल एवं शर्मा, रेणू (2007) ''पर्यावरण शिक्षा'' शिक्षा प्रकाशन, जयपुर।
4. मेहता, ओम प्रकाश (2015) ''भारतीय पर्यावरणीय आचरण शास्त्र: सनातन परम्परा का रचनात्मक सर्वेक्षण'', न्यू भारतीय बुक कार्पोरेशन, नई दिल्ली।
5. सिंह, भोपाल (1999) ''पर्यावरण शिक्षा'', आर्य बुक डिपो, नई दिल्ली।
6. राजस्थान पत्रिका (24 जनवरी, 2020) ''सालाना 10 हजार करोड़ टन के पार हुआ धरती का दोहन''।
7. प्रतियोगिता दृष्टि ''ई कचरा प्रबन्धन (संशोधन) विधेयक 2018'', वर्ष 2012, अंक 4, अप्रैल 2018, पृ. 28.
8. जोशी, ओ.पी. ''धरती प्रसन्नता और बढ़ता प्रदूषण'', पर्यावरण डाइजेस्ट, वर्ष-31, अंक-5, मई 2017, पृ. 41-44.

Copyright©authors